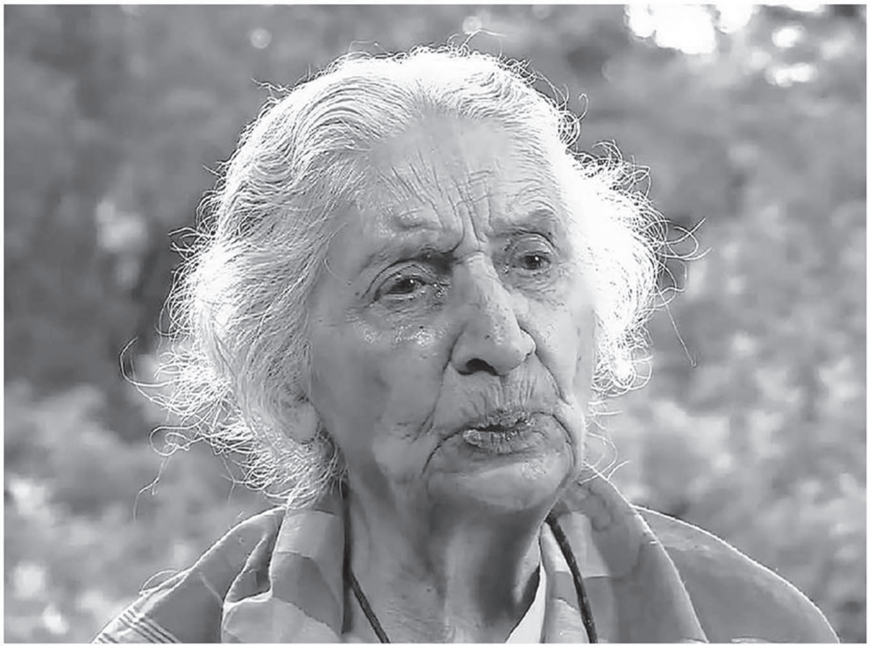

साहित्य अकादेमी ने कपिला वात्स्यायन को याद किया

आलोकपर्व नेटवर्क

कपिला वात्स्यायन भारत की कला परंपराओं का महत्त्वपूर्ण चेहरा थीं और कलाकारों तथा सरकार के बीच एक पुल का कार्य करती रहीं। उन्होंने भारत के लिए कई प्रमुख कला संस्थाओं का निर्माण किया। उन्होंने भरपूर जीवन जिया। कपिला जी को भारतीय तथा भारत को प्रेम करने वाले लोग हमेशा याद करते रहेंगे।

प्रख्यात विदुषी, महान कलाविद्, इतिहासकार, पुरातत्त्ववेता और लेखिका कपिला वात्स्यायन की स्मृति में साहित्य अकादेमी में आज एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। आभासी मंच पर आयोजित इस श्रद्धांजलि सभा में उनके साथ जुड़े रहे विभिन्न क्षेत्रों के लेखकों, विद्वानों आदि ने अपने श्रद्धा-शब्द अर्पित किए। सबसे पहले प्रख्यात पंजाबी लेखिका अजीत कौर ने उनके निधन को पूरे भारतीय सांस्कृतिक संसार की क्षति बताते हुए कहा कि वे भारतीय संस्कृति का चलता-फिरता विश्वकोश थीं। प्रख्यात लेखक एवं शिक्षाविद् हरीश त्रिवेदी ने उनके ज्ञान की कई अद्भुत क्षमताओं की तरफ इशारा करते हुए कहा कि गीत गोविंद और नाट्य शास्त्र पर उनका काम अतुलनीय है। पूर्व संस्कृति सचिव जे. वीरा राघवन ने उनको ऐसी विदुषी के रूप में याद किया जो कलाओं के विभिन्न आयामों को खोजने के लिए हमेशा तत्पर रहती थीं और कलाओं की प्रस्तुति को आम लोगों को सुलभ कराने के लिए हमेशा प्रयासरत रहती थीं। ललित कला अकादेमी के अध्यक्ष उत्तम पचारने ने उन्हें भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी समीक्षक के रूप में श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हुए कहा कि वे प्रचार से दूर रहते हुए भी भारतीय संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए तत्पर रहती थीं। इंडिया इंटरनेशनल सेंटर की पूर्व निदेशक कविता शर्मा ने उनके साथ अपने पारिवारिक रिश्तों की चर्चा करते हुए कहा कि वे अपने सभी कार्यों को परिष्कृत तरीके से होते हुए देखना चाहती थीं। उनके जाने से कई संस्थाएँ अपने को अनाथ महसूस कर रही हैं। पूर्व राज्यपाल बाल्मीकि प्रसाद सिंह ने कहा कि वे कला तथा साहित्य की एक विलक्षण प्रतिभा थीं और संस्थान निर्माण में भी अग्रणी थीं। उनके द्वारा बनाई गई संस्थाओं में उनका दृष्टिकोण स्पष्टतः परिलक्षित होता है। वे भारत की संस्कृति की सच्ची प्रशंसक थीं। प्रख्यात संस्कृत विद्वान एवं रंग निर्देशक कमलेशदत्त त्रिपाठी ने उन्हें 'एक युग' की संज्ञा देते हुए कहा कि उनकी ज्ञान की विराटता का छोर पाना मुश्किल था। उन्होंने भारतीय चिंतन और मीमांसा को विश्व फलक पर स्थापित किया। अपने समय के श्रेष्ठ विद्वानों के साथ संपर्क रखते हुए उन्होंने कई अंतरराष्ट्रीय स्तर की संस्थाओं का निर्माण किया।

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र के सदस्य सचिव सच्चिदानंद जोशी ने भोपाल में उनके साथ बिताए हुए समय को याद करते हुए कहा कि उनमें सारी कलाओं को एक मंच पर लाने की अद्भुत क्षमता थी। वे साक्षात सरस्वती रूपी ऐसी विदुषी थीं जिनकी चैतन्य मेधा को हमेशा नमन करने का मन होता है। प्रख्यात संस्कृत लेखक राधावल्लभ त्रिपाठी ने 1971 में विश्व संस्कृत सम्मेलन में उनके साथ अपनी पहली मुलाकात को याद करते हुए कहा कि उन्होंने वहाँ जयदेव रचित 'गीत गोविंद' को विभिन्न भारतीय नृत्यों में प्रस्तुत करके अपार प्रशंसा प्राप्त की थी। संपूर्ण जीवन का उल्लास ज्ञान में कैसे आता है यह उनसे सीखा जा सकता है। भारतीय सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने के लिए उनके प्रयासों को कभी भुलाया नहीं जा सकेगा। प्रख्यात संस्कृतिकर्मी प्रेमा नंदकुमार ने उन्हें 'महासरस्वती' की उपाधि देते हुए कहा कि वे भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए हर किसी का सहयोग करने के लिए हमेशा तैयार रहती थीं।

साहित्य अकादेमी के पूर्व सचिव इंद्रनाथ चौधुरी ने संगीत, नृत्य, नाटक और साहित्य में भी उनकी गहरी पैठ को याद करते हुए कहा कि वे पुनर्जागरणकाल की प्रतिनिधि महिला थीं। वे विभिन्न संगोष्ठियों में पढ़े गए आलेखों पर उसी समय बेबाक टिप्पणी करती थीं और प्रस्तुतकर्ता को अपनी कमियाँ सुधारने में सहयोग भी करती थीं। इंद्रनाथ चौधुरी ने साहित्य अकादेमी के लिए भरत के नाट्य शास्त्र पर लिखी गई उनकी पुस्तक की भी चर्चा की। जनजातीय बोली और भाषाओं के संरक्षण से जुड़ी प्रख्यात भाषाविज्ञानी अन्विता अब्बी ने उनको याद करते हुए कहा कि वे ज्ञान और निष्ठा की प्रतिमूर्ति थीं और उनके जाने से मानों पूरा एक युग समाप्त हो गया है। उनके द्वारा सुझाई गई कई संगोष्ठियों के संदर्भ देते हुए उन्होंने कहा कि वे एक भाषा और उसके लेखन को लोक परंपराओं तक पहुँचने की प्रक्रिया को बहुत गहराई से समझना और समझाना चाहती थीं। प्रख्यात कवि और साहित्य अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि उनके जाने से भारतीय कला और संस्कृति के क्षेत्र में गहरा शून्य पैदा हुआ है। उन्होंने उनकी वैविध्यपूर्ण प्रतिभा को याद करते हुए कहा कि वे ऐसी विदुषी थीं कि उनमें पूरी भारतीय संस्कृति मूर्तिमान हो उठती थी। प्रख्यात अंग्रेजी लेखिका मालाश्री लाल ने 'गीत गोविंद' पर किए गए उनके कार्य की चर्चा करते हुए कहा कि वे इसकी दरभंगा क्षेत्र में प्रस्तुति पर उनसे बात करने गई थीं और तब कपिला जी ने अपने व्यापक ज्ञान से उन्हें चमत्कृत कर दिया था। प्रख्यात लेखिका सुकृता पॉल कुमार ने उन्हें अपनी दूसरी माँ के रूप में याद करते हुए कहा कि उनका कार्य गहरे ज्ञान और कर्मठता के बिना किया जाना संभव नहीं है। उन्होंने कहा कि वे हमेशा नए विचारों का सम्मान करती थीं और उनके कार्यान्वयन को लेकर बड़ी सजग रहती थीं। वे आज हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उनकी दूरदृष्टि हम सबका मार्गदर्शन अवश्य करती रहेगी। प्रख्यात शिक्षाविद् चंद्रमोहन ने उनको 'रोल मॉडल' बताते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति पर विचार-विमर्श के लिए उन्होंने कई मंच तैयार किए। साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने कहा कि वे विदेशों में भारतीय संस्कृति की 'अघोषित राजदूत' थीं। वे स्वयं में एक संस्थान थीं और उन्होंने सत्ता और संस्कृति के प्रति जागरूकता और संवेदना पैदा की। उन्होंने साहित्य अकादेमी के लिए उनके द्वारा हिंदी एवं अंग्रेजी में वासुदेवशरण अग्रवाल पर तैयार किए गए संचयन को याद करते हुए कहा कि वे अपने गुरुओं का सच्चा सम्मान करती थीं। प्रख्यात नृत्यांगना सोनल मानसिंह ने साहित्य अकादेमी को भेजे अपने शोक संदेश में कहा कि वे भारत की कला परंपराओं का महत्त्वपूर्ण चेहरा थीं और कलाकारों तथा सरकार के बीच एक पुल का कार्य करती रहीं। उन्होंने भारत के लिए कई प्रमुख कला संस्थाओं का निर्माण किया। उन्होंने भरपूर जीवन जिया। कपिला जी को भारतीय तथा भारत को प्रेम करने वाले लोग हमेशा याद करते रहेंगे। कार्यक्रम के प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने उन्हें साहित्य अकादेमी की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि उन्होंने शोधार्थियों का एक ऐसा समूह तैयार किया जिसने विभिन्न विधाओं के विकास के लिए बड़ा मंच बनाया। उन्होंने कपिला वात्स्यायन को ज्ञान का भंडार बताते हुए साहित्य अकादेमी के प्रति उनके प्रेम और सहयोग को भी विनम्रतापूर्वक याद किया। सभा का संचालन साहित्य अकादेमी के संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी ने किया।